Himachal Pradesh University Journal, July 2011

राष्ट्र भाषा हिंदी और देवनागरी लिपि

प्रोफेसर जोगेष कौर*

प्रतिनिधि भाषा हिंदी वाणी की संदेषवाहिका साहित्य जीवन के हिन्दी षब्दों का मधुवन अखिल विष्व में संदेष देने वाली राष्ट्रीय भाषा हिन्दी व देवनागरी लिपि हमारी स्वातंत्र्य चेतना और राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान है आदर्ष लिपि की कसौटी पर देवनागरी लिपि का मूल्यांकन करने हेतु डॉ० 'हणमत राव पाटील' ने नागरी संगम के अंक 129 में विचार अभिव्यक्त करते हुए देवनागरी लिपि को देवभाषा का ताज पहनाया और सभी भारतीय भाषाओं की लिपि स्वीकार किया संवैधानिक रूप में देवनागरी लिपि भारतवर्ष की राजलिपि है।

आचार्य विनोवा भावे जी ने देवनागरी लिपि को विष्व नागरी लिपि में विषेष स्थान दिया और विष्व की कोई भी वर्णमाला नागरी लिपि की तरह सर्वांगीण व वैज्ञानिक नहीं है यह स्पष्ट किया। हिन्दी भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है क्योंकि डॉ० मल्लिक मुहम्मद के अनुसार देवनागरी की उपयोगिता निर्विवाद है। भारत की सभी भाषाओं के लिए एक लिपि अपनाना देष को जोड़ने वाली कड़ी का काम करता है। देवनागरी लिपि भारतीय भाषाओं की सर्वोत्तम लिपि है जो भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 में राज्य भाषा हिंदी की आधिकारिक लिपि के रूप में स्वीकार्य है। राष्ट्रीय एकता का दूसरा नाम है राष्ट्रीय भाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि। विष्व में अलग–अलग भाषाओं के लिए अलग–अलग लिपियों का प्रयोग होता है। अकेले भारत में भी क्षेत्रीय, भाषिक राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय लिपियों का प्रयोग मिलता है। डा० तिलक सिंह के अनुसार देवनागरी लिपि सर्वस्पर्षी और संप्रेषणीय बन गई है। भारतीय राष्ट्रीय भाषा हिन्दी और अन्य भाषा और बोलियों के लिए

***प्रोफेसर जोगेष कौर, हिन्दी–विभाग, अंर्तराष्ट्रीय दूरवर्ती एवं मुक्त अध्ययन केंद्र, हिमाचल प्रदेष विष्वविद्यालय, समरहिल, षिमला 171005**

देवनागरी लिपि का प्रयोग वैज्ञानिक है। भारत का वर्चस्व आज उसकी भाषा, एकात्मकता और देवनागरी लिपि के प्रयोग के कारण बढ़ा है। व्यापार, सूचना, कम्पयूटर, नेटवर्किंग आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी में काम करने वालों में देवनागरी लिपि का प्रयोग सुगम प्रतीत होने लगेगा। एक विषाल देष उसमें रहने वाले अनेक जनजातियां अनेक भाषाओं का प्रयोग करने वाले देष में हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा स्वीकार कर देवनागरी लिपि की सुसंबद्धता वैज्ञानिकता को सिद्ध किया है।

भारत की पहचान हिन्दी भाषा से होने लगी है। देवनागरी लिपि व राष्ट्रभाषा हिन्दी ने स्वतंत्रता संग्राम में अपनी विषिष्ट भूमिका का निर्माण किया और गांधी जैसे नेताओं ने उसे जन–जन जोड़ने का प्रयास किया है। हिन्दी प्रचार के लिए वैज्ञानिक देवनागरी लिपि को अपनाना आवष्यक है। भाषा अभिव्यक्ति का समर्थ आधार है और भाषा संस्कृति की संवाहिका भी है। डॉ० विंदेष्वर पाठक के अनुसार भाषा साधना और संस्कृति साध्य है। भाषा अभिव्यंजक और संस्कृति अभिव्यंग्य है। भाषा ही संस्कृति के मूल्य और सौंदर्य की एक युग से दूसरे युग में हस्तांतरित करती है। भाषा ही संस्कृति की चेतना को जन–जन तक संप्रेषित करती है।

हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि हमारी संस्कृति को और मनोभावों को संप्रेषित करने में सहायक है। देवनागरी लिपि और विष्व भाषा का संदर्भ अत्यंत पेचीदा है लेकिन विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के प्रचार–प्रसार और प्रयोग के कारण सामान्य भाषा बनने में हिन्दी को देवनागरी के माध्यम से वैज्ञानिक व षुद्ध रूप मिला। आदर्ष लिपि में एक ध्वनि के लिए एक चिन्ह होता है जो लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है। इसलिए देवनागरी लिपि सरल, षुद्ध व वैज्ञानिक है। भारत के अधिकांष प्रदेषों में हिंदी भाषा का प्रयोग मूल रूप से मातृ भाषा के रूप में होता है। इसलिए हिन्दी भाषा का प्रयोग देवनागरी लिपि के उचित प्रयास से भारत ही नहीं विष्व मानचित्र पर भी अंकित है।

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए एक लिपि का होना आवष्यक है जो देष के आधार को सुदृढ़ करता है और व आधार नागरी लिपि के प्रयोग से ही संभव है। इस लिपि में संपूर्णता, एकरूपता, निषचितता, अनपविस्तृतता, नियतता, क्रमबद्धता, स्पष्टता, गतिषीलता, यंत्रयोग्यता आदि सभी गुण विद्यमान है जो इसे वैज्ञानिक और मुख्य संपर्क भाषा के रूप में स्वीकृत करती है।

देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानवीकरण आवष्यक है जिसके अन्तर्गत भू–मंडलीकरण व इसकी बाजार–वाली जरूरतों, सूचना, प्रौद्योगिकी को ऊंचाई पर ला खड़ा करने के लिए आवष्यक है भाषा को संबोधन और संप्रेषण बनाने के लिए देवनागरी लिपि को सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरि भावांकन और विचारांकन की अभिव्यक्ति का साधन माना है। राष्ट्रीय भाषा हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन और प्रयोग में समस्याएं हैं जो मानव समाज में वर्गवाद की भावना से उत्प्रेरित

होकर कर रहा है। आज हम हिन्दी बोलना, लिखना या उपाधि ग्रहण करना स्तर का नहीं मानते। हीन भावना से ग्रसित हैं हिन्दी बोलने व उपाधि ग्रहण करने वाले विद्यार्थी। मैं यहां स्पष्ट रूप से कहना चाहती हूँ कि ऐसा सोचना सरासर गलत है क्योंकि हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है उसका सम्मान करना तथा प्रचार व प्रसार करना तथा प्रयोग में लाना हमारे लिए गौरव की बात है जबकि विष्व के अन्य देष हमारी भाषा, हमारी संस्कृति, दर्षन व धर्म की ओर आकर्षित होते हैं तो हमारे देषवासी क्यों नहीं। भाषा से संस्कृति जुड़ी है और अपनी संस्कृति को छोड़ना मानव के लिए सबसे बड़ा श्राप है। राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, भारतीयता, मानवता और सांस्कृतिक धरोहर को अगर बचाना है तो हिन्दी भाषा का प्रयोग देवनागरी लिपि के रूप में करना होगा। आने वाले समय में राष्ट्रीय भाषा के माध्यम से नागरी लिपि के प्रयोग की वजह से सर ऊंचा करके विष्व में हमारा वर्चस्व स्वर्णाक्षरों में दर्ज होगा। आज यह प्रण किया जाए कि राष्ट्र भाषा हिन्दी समाज में प्रतिष्ठित स्थान ग्रहण करवाती है न कि समाज स्तर को नीचा करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नागरी संगम, जनवरी मार्च–2010 अंक– 129 पृष्ठ–9
2. नागरी संगम अंक– 10...., अक्तूबर दिसंबर– 2005, पृष्ठ 11–12
3. विंदेष्वर पाठक, भाषा संस्कृति की संवाहिका .... चक्रवात, जनवरी 2008
4. राष्ट्रभाषा, अंक 3–4, मार्च अप्रैल, 2008 पृष्ठ 5,6
5. श्रेष्ठ साहित्यिक निबंध, अषोक भाटिया, लेख.....692
6. वही, लेखक ओम प्रकाष भाटिया पृष्ट 693